308

(राग: यमन जिल्हा ताल: धुमाळी)

असा गुरुमंत्र। तुटे समूळ संसृतिसूत्र।।धू.।। दिधले मंत्र हे वसिष्ठ रामा। सांदिपन तोहि घन:शामा। उद्धव गेला निजात्मधामा। हरिप्रिय पात्र ॥१॥ मंत्र हे स्फुरले आदिब्रह्माला। नारायण उपदेशी विधिला। ध्यानी गवसे मुनि महाऋषिला। वाक्य पवित्र॥शा मंत्रें चिन्मार्तांड प्रकाशे। विद्यालयीं ही अविद्या नासे। देहीं सहज मुक्ति ती गवसे। दिगंबर गात्र उरे चिन्मात्र॥३॥